आधुनिक भारतीय आर्यभाषा के विशेषताओं पर प्रकाश डालें।
04 - आधुनिक भारतीय भाषाओं के विकास पर प्रकाश डालें।

आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं का विकास अपभ्रंश अथवा तृतीय प्राकृत से हुआ है जैसा कि कहा जाता है कि नागर, ब्राचड और उपनागर इन तीनों अपभ्रंश से सभी आधुनिक आर्यभाषाओं का विकास नहीं दिखाया जा सकता। अतः प्राकृतों के आधार पर ही अपभ्रंशों की कल्पना की गयी थी अर्थात जहाँ जो प्राकृत बोली जाती थी उसी के अपभ्रंश रूप का विकास हुआ।

आधुनिक आर्य भाषा की सामान्य विशेषताएँ।

(1) आधुनिक आर्यभाषाएँ लगभग पूर्णतः अयोगात्मक हो गयी है।

(2) ध्वनियों में अनेक परिवर्तन हो गये हैं फिर भी लिपि में परम्परा का पालन किया जा रहा है। जैसे ष का शुद्ध उच्चारण नहीं होता, किंतु लिखने में प्रयोग होता है। ष का उच्चारण था तो श जैसा होता है या स जैसा। अर्द्धमागधी से विकसित भाषाओं के क्षेत्र में ष और स में कोई भेद नहीं किया जाता है। ऋ और रि में उच्चारण की दृष्टि से कोई भेद नहीं है। महाराष्ट्र और उड़ीसा में ऋ का उच्चारण रु हो जाता है।

(3) अपभ्रंश के समान द्वित्व व्यंजन के स्थान पर एक का लोप और पूर्ववर्ती अक्षरों में क्षतिपूरक दीर्घता यहाँ भी पायी जाती है। जैसे कर्म = कम्म = काम। निद्रा = णिद्दा = नींद

(4) स्वर के बदले बल का प्राधान्य है किन्तु वाक्य में स्वर का प्रयोग भी पाया जाता है।

(5) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि अंग्रेजी, अरबी और फारसी के बहुत सारे शब्द भारतीय भाषाओं में प्रविष्ट हो गये है। अपभ्रंश-काल तक शब्द भण्डार देशी था।

आधुनिक भाषाएँ — पश्चिमी हिन्दी- इसकी पाँच प्रमुख बोलियाँ हैं- ब्रजभाषा, खड़ीबोली, बांगरू बागरू, कन्नौजी और बुन्देली।

ब्रजभाषा- ब्रजभाषा का महत्व साहित्यिक दृष्टि से बहुत बड़ा है मध्ययुग में साहित्यभाषा के रूप में उसका प्रचार गुजरात से लेकर बंगाल तक था। ब्रजभाषा मथुरा, अलीगढ़ आगरा में बोली जाती है।

खड़ीबोली— खड़ी बोली मुख्यतः बिजनौर, मुरादाबाद, सहारणपुर देहरादून की भाषा है। साहित्यिक दृष्टि से खड़ीबोली के दो रूप हो गये है हिन्दी और उर्दू।

बाँगरू – बांगरू दिल्ली, रोहतक, करनाल, हिसार, पटियाला में बोली जाती है। राजस्थान और पंजाब की सीमा समीप होने के कारण राजस्थानी और पंजाबी का बाँगरू पर प्रभाव पाया जाता है। बाँगरू का दूसरा नाम हरियाणी भी है। वस्तुतः यह खड़ी-बोली की विभाषा रूप है।

बुन्देली – बुन्देल का क्षेत्र झाँसी, हमीरपुर, जालौन, ग्वालियर, भोपाल, सागर है। बुन्देली और ब्रजभाषा में अत्यधिक साम्य है। ब्रजभाषा कन्नौजी और बुन्देली को एक ही बोली के विभिन्न रूप कह सकते हैं।

कन्नौजी – इसका क्षेत्र अवधी और ब्रजभाषा के मध्य में पड़ता है। यह मुख्यतः फर्रुखाबाद में बोली जाती है।

राजस्थानी – इसके अन्तर्गत चार बोलियाँ हैं – मेवाती, मारवाड़ी, मालवी और जयपुरी।

मेवाती – मेवाती का क्षेत्र उत्तरी राजस्थान के अलवर तथा हरियाणा राज्य के गुड़गाँव जिले का निकटवर्ती भाग है। इसपर ब्रजभाषा का प्रभाव है।

मारवाड़ी – मारवाड़ी का प्रयोग पश्चिमी राजस्थान, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर, में होता है। पुरानी मारवाड़ी को ही डिंगल कहते हैं।

मालवी – यह मालवा की भाषा है जो राजस्थान के दक्षिण-पूर्व भाग में पड़ता है। मालवी का केन्द्र इन्दौर है।

जयपुरी – राजस्थान के पूर्वी भाग में जयपुरी और हाड़ौती बोली जाती है। इसका क्षेत्र जयपुर, कोटा तथा बूंदी है।

पूर्वी हिन्दी – इसमें तीन बोलियाँ हैं – अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।

अवधी – लखनऊ, फैजाबाद, सीतापुर, प्रतापगढ़ में बोली जाती है। 'रामचरितमानस' तथा प्रेम काव्यों की भाषा अवधी होने के कारण स्थायी साहित्यिक महत्व की वस्तु बन गयी है।

बघेली – इसका केन्द्र रीवा है। इसको अवधी का रूप-भेद मानते हैं।

छत्तीसगढ़ी – छत्तीसगढ़ी मध्यप्रदेश के रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़, आदि स्थानों में बोली जाती है।

इसके अतिरिक्त आधुनिक भाषाओं में भोजपुरी, मैथिली, मगही, बँगला, असमी, उड़िया, पहाड़ी, पंजाबी, सिंधी, मराठी आदि भाषाएँ भी हैं।

Scanned with CamScanner